IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Impact Factor: 5.731

Volume 5, Issue 7, July 2025

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना

मुकेश गौड़[1], डॉ. कविता चौधरी[2]

[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग

[2]सह आचार्य, हिन्दी विभाग

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार, हरियाणा

सारांश

शिवानी हिन्दी साहित्य की ऐसी लेखिका हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से स्त्री की आत्म-अनुभूति, अस्तित्वबोध और आत्मनिर्णय की चेतना को स्वर दिया। उनके लेखन में स्त्री केवल करुणा की प्रतीक नहीं बल्कि अपनी पहचान गढ़ने वाली सक्रिय सत्ता है। प्रस्तुत लेख में शिवानी के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता और आत्मनिर्णय के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य संकेतक: शिवानी, स्त्री अस्मिता, आत्मनिर्णय, स्त्री विमर्श, उपन्यास, पहचान, स्वतंत्रता।

परिचय

बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य स्त्री विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस दौर में शिवानी का लेखन स्त्री के अंतर्मन, सामाजिक प्रतिबंधों और स्वतंत्र निर्णय की आकांक्षा का गहरा चित्रण करता है। उन्होंने न केवल स्त्री के संघर्ष और द्वंद्व को उकेरा बल्कि उसे आत्मनिर्णय की चेतना से भी जोड़ा।

हिंदी साहित्य के इतिहास में बीसवीं शताब्दी को स्त्री चेतना के उभार और स्त्री अस्मिता की पहचान का काल माना जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रवाद, सामाजिक सुधार और आधुनिक शिक्षा ने स्त्रियों के जीवन में नए आयाम जोड़े। यह वह समय था जब स्त्रियाँ धीरे-धीरे घर की चौखट से बाहर निकलकर सार्वजनिक जीवन में भागीदारी करने लगीं। इस पृष्ठभूमि में साहित्य भी उनसे अछूता नहीं रहा। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद से लेकर यशपाल और अमृतलाल नागर जैसे लेखकों ने स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को उभारा, किंतु स्त्री अनुभव की सूक्ष्म और संवेदनात्मक अभिव्यक्ति विशेष रूप से महिला लेखिकाओं के लेखन में दिखाई दी। इसी कड़ी

में गौरा पंत 'शिवानी' का नाम अत्यंत सम्मानपूर्वक लिया जाता है। शिवानी ने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन की जटिलताओं, अस्मिता की खोज, आत्मनिर्णय की चेतना और सामाजिक संरचनाओं से संघर्ष को अत्यंत सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है।

शिवानी का जन्म 17 अक्टूबर 1923 को राजकोट (गुजरात) में हुआ और उनका वास्तविक नाम गौरा पंत था। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। उन्होंने साहित्य के लगभग सभी रूपों उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत आदि में लेखन किया, लेकिन उनके उपन्यासों ने उन्हें हिंदी साहित्य में अमिट पहचान दिलाई। उनके लेखन का दायरा केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि उसमें गहरी सामाजिक चेतना, स्त्री के अंतर्मन की खोज और आत्मनिर्णय की प्रक्रिया का यथार्थ चित्रण है। उनके उपन्यासों जैसे *कृष्णकली, चौक घाट का सूरज, रति विलाप, सम्पूर्णता, मेरा भूत, असमय* आदि में स्त्रियों के जीवनानुभव, पीड़ा, संघर्ष और विद्रोह की कहानियाँ न केवल साहित्यिक सौंदर्य से परिपूर्ण हैं, बल्कि स्त्री विमर्श की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं (शर्मा, 2008)।

भारतीय समाज की संरचना सदियों से पितृसत्तात्मक रही है। स्त्री को हमेशा से परंपरा, मर्यादा, धर्म और परिवार के नाम पर सीमित दायरे में बाँध दिया गया। उसे "गृहलक्ष्मी" और "पतिव्रता" की भूमिकाओं तक सीमित कर दिया गया, जहाँ उसका जीवन दूसरों के लिए समर्पित था, लेकिन स्वयं उसके लिए कुछ नहीं। शिक्षा और आधुनिकता ने स्त्री के भीतर आत्मसजगता का बीज बोया। उसने यह प्रश्न उठाना शुरू किया कि क्या उसका जीवन केवल दूसरों के लिए है? क्या उसे अपने निर्णय लेने का अधिकार नहीं है? यही प्रश्न "स्त्री अस्मिता" और "आत्मनिर्णय की चेतना" की धुरी बने। शिवानी के उपन्यास इसी बौद्धिक और भावनात्मक संघर्ष की आवाज़ हैं।

स्त्री अस्मिता का आशय है, स्त्री का अपना अलग अस्तित्व, जिसकी पहचान केवल पत्नी, माँ, बहन या बेटी के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में हो। आत्मनिर्णय का तात्पर्य है, अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की क्षमता और स्वतंत्रता। शिवानी के उपन्यासों में यह दोनों तत्व गहराई से दिखाई देते हैं। उनकी नायिकाएँ परंपरा और समाज की जंजीरों में बँधी होते हुए भी अपने आत्म-संवेदन की तलाश करती हैं। वे प्रेम, विवाह, मातृत्व और परिवार की जटिलताओं के बीच अपनी राह बनाती हैं और कई बार सामाजिक मानदंडों से टकराने का साहस भी करती हैं। यही कारण है कि शिवानी का साहित्य स्त्री विमर्श के अध्ययन में केंद्रीय महत्व रखता है (त्रिपाठी, 2011)।

शिवानी के उपन्यासों की नायिकाएँ केवल सामाजिक संरचनाओं की पीड़िता नहीं हैं, बल्कि वे संघर्षशील भी हैं। उदाहरण स्वरूप, *कृष्णकली* की नायिका पारंपरिक रिश्तों की बेड़ियों में बंधी होने के बावजूद आत्मनिर्णय

का साहस दिखाती है। वहीं *चौक घाट का सूरज* में स्त्री अपने जीवन का मार्ग स्वयं निर्धारित करती है। *रति विलाप* जैसी कृतियों में स्त्रियों की भावनात्मक जटिलताओं और उनके विद्रोही स्वर को गहराई से उकेरा गया है। शिवानी स्त्री की अंतरात्मा की आवाज़ को स्वर देती हैं, जो लंबे समय तक समाज द्वारा दबाई जाती रही थी।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की चर्चा प्रायः महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा और मैत्रेयी पुष्पा जैसी लेखिकाओं के संदर्भ में की जाती है, किंतु शिवानी का योगदान भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अंतर यह है कि शिवानी की भाषा, शैली और विषयवस्तु में गहरी संवेदनशीलता और भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ाव दिखाई देता है। वे अपने पात्रों को परंपरा से काटकर नहीं दिखातीं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में उनके संघर्ष को प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य स्त्रियों की मानसिक और सामाजिक स्थिति को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होता है (शुक्ल, 2015)।

स्त्री विमर्श का अर्थ केवल पुरुष-विरोधी दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि स्त्री की स्वतंत्र पहचान की स्थापना है। शिवानी ने अपने लेखन के माध्यम से यही संदेश दिया कि स्त्री की स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय उसकी अस्मिता का आधार है। उनके उपन्यासों में स्त्रियाँ प्रेम करती हैं, धोखा खाती हैं, विद्रोह करती हैं, हारती हैं और जीतती भी हैं। यह सभी स्थितियाँ उन्हें अपने अस्तित्व के प्रति सजग बनाती हैं। स्त्रियों की यही सजगता साहित्य में "स्त्री अस्मिता" के रूप में सामने आती है।

शिवानी का साहित्य स्त्रियों की भावनात्मक दुनिया का दर्पण है। उनकी लेखनी में स्त्रियाँ केवल पुरुष के सापेक्ष परिभाषित नहीं होतीं, बल्कि अपनी अलग आंतरिक दुनिया और संघर्षों के साथ प्रस्तुत होती हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यासों को पढ़ते समय पाठक स्त्री की अंतरात्मा की वेदना और उसकी स्वतंत्रता की आकांक्षा को गहराई से महसूस करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिवानी के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना का चित्रण केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक सच्चाई का दर्पण भी है। उनका साहित्य पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की स्थिति को उजागर करता है और यह संदेश देता है कि स्त्री की स्वतंत्रता समाज के विकास के लिए अनिवार्य है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 7, July 2025
IJETIR
Impact Factor: 5.731

विवेचन

1. स्त्री अस्मिता का प्रश्न

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री पात्र परंपरागत बंधनों से टकराते हुए अपनी अस्मिता की खोज करती हैं। उदाहरणस्वरूप *कृष्णकली* और *समर्पिता* में स्त्री पात्र आत्मसंघर्ष के बीच अपनी पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं। स्त्री अस्मिता का प्रश्न मूलतः स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व और उसकी पहचान से जुड़ा हुआ है। भारतीय समाज में लंबे समय तक स्त्री को केवल गृहस्थी, मातृत्व और परिवार तक सीमित कर दिया गया। उसकी पहचान पुरुष के संदर्भ में पत्नी, माँ, बहन या बेटी के रूप में तय की गई, जबकि उसका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व उपेक्षित रहा। यही स्थिति स्त्री अस्मिता के प्रश्न को जन्म देती है। अस्मिता का आशय है कि स्त्री को उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं, क्षमताओं और अधिकारों सहित एक संपूर्ण मनुष्य के रूप में स्वीकार किया जाए। आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार आंदोलनों और साहित्य ने स्त्री के भीतर अपनी अस्मिता की खोज का साहस पैदा किया। आज स्त्री अस्मिता का प्रश्न केवल व्यक्तिगत पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक समानता, न्याय और मानवाधिकारों का भी प्रश्न है। यह प्रश्न इस बात पर बल देता है कि स्त्री को अपनी स्वतंत्र पहचान और आत्मनिर्णय का अधिकार मिलना ही चाहिए।

स्त्री अस्मिता का प्रश्न स्त्री की स्वतंत्र पहचान और उसके अस्तित्व की स्वीकृति से जुड़ा है। परंपरागत समाज ने स्त्री को केवल पत्नी, माँ या बेटी की भूमिकाओं में बाँधकर देखा, जिससे उसका व्यक्तिगत व्यक्तित्व दबा रहा। अस्मिता का आशय है कि स्त्री को एक संपूर्ण मनुष्य के रूप में मान्यता मिले, जिसकी अपनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और अधिकार हों। आधुनिक शिक्षा और सामाजिक आंदोलनों ने स्त्री को अपनी पहचान खोजने का साहस दिया। आज स्त्री अस्मिता का प्रश्न केवल व्यक्तिगत मुक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना का भी महत्त्वपूर्ण आधार है।

2. आत्मनिर्णय की चेतना

स्त्रियाँ अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने का साहस दिखाती हैं। *असंभव, मृण्मय्या* जैसे उपन्यासों में नायिकाएँ समाज द्वारा थोपी गई भूमिकाओं को अस्वीकार कर स्वतंत्र निर्णय लेती हैं। आत्मनिर्णय की चेतना का आशय है व्यक्ति की यह क्षमता और अधिकार कि वह अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं ले सके। विशेषकर स्त्री के संदर्भ में यह चेतना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज में उसके जीवन के अधिकांश निर्णय शिक्षा, विवाह, मातृत्व या करियर परिवार और समाज द्वारा तय किए जाते रहे हैं। आत्मनिर्णय की चेतना स्त्री को अपने अस्तित्व का बोध कराती है और उसे यह विश्वास देती है कि वह अपने

सुख-दुख, प्रेम और भविष्य के संबंध में स्वयं निर्णय लेने में सक्षम है। साहित्य में यह चेतना स्त्रियों की विद्रोही मानसिकता, स्वतंत्रता की आकांक्षा और आत्मसम्मान के रूप में प्रकट होती है। हिंदी उपन्यासों, विशेषकर शिवानी के साहित्य में, स्त्री पात्रों का आत्मनिर्णय उनके व्यक्तित्व को गहराई प्रदान करता है और उन्हें केवल अनुयायी नहीं, बल्कि अपनी राह स्वयं चुनने वाली सशक्त नायिका बनाता है।

आत्मनिर्णय की चेतना व्यक्ति की यह क्षमता है कि वह अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं ले सके। स्त्री के संदर्भ में यह विशेष महत्व रखती है, क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज ने उसके अधिकांश निर्णय शिक्षा, विवाह, परिवार या करियर हमेशा दूसरों पर छोड़ दिए। आत्मनिर्णय की चेतना स्त्री को अपने अस्तित्व और अधिकारों का बोध कराती है। साहित्य में यह चेतना नायिकाओं के विद्रोह, स्वतंत्रता की आकांक्षा और आत्मसम्मान में परिलक्षित होती है। शिवानी के उपन्यासों की स्त्रियाँ इसी चेतना के बल पर परंपरा से संघर्ष करती हुई अपने जीवन का मार्ग स्वयं चुनने का साहस दिखाती हैं।

परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व

शिवानी की नायिकाएँ परंपरागत मूल्यों और आधुनिक चेतना के बीच फँसी हुई दिखाई देती हैं। लेकिन अंततः वे आत्मनिर्णय को अपनाकर अपने जीवन को नए आयाम देती हैं। भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व एक जटिल वास्तविकता है। परंपरा जहाँ सांस्कृतिक मूल्यों, पारिवारिक संरचनाओं और सामाजिक आचार-व्यवहार का प्रतीक है, वहीं आधुनिकता स्वतंत्र सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देती है। स्त्री जीवन में यह द्वंद्व विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देता है।

एक ओर उससे अपेक्षा की जाती है कि वह पारंपरिक मर्यादाओं गृहस्थी, मातृत्व और आज्ञाकारिता का पालन करे, वहीं दूसरी ओर शिक्षा और सामाजिक जागरूकता उसे आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता की ओर प्रेरित करती है। यही संघर्ष स्त्री के भीतर गहरे मानसिक द्वंद्व को जन्म देता है। साहित्य में यह द्वंद्व कई रूपों में उभरता है, जहाँ नायिकाएँ परंपरा का सम्मान करती हुई भी आधुनिकता की ओर अग्रसर होती हैं। शिवानी जैसे लेखकों ने इस संघर्ष को गहराई से चित्रित किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि परंपरा और आधुनिकता का संतुलन ही स्त्री के संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व विशेष रूप से स्त्री जीवन में गहराई से दिखाई देता है। परंपरा उसे आज्ञाकारिता, गृहस्थी और मर्यादा का प्रतीक मानती है, जबकि आधुनिकता शिक्षा, स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की चेतना देती है। यह संघर्ष स्त्री के भीतर मानसिक द्वंद्व पैदा करता है एक ओर वह परिवार और समाज की अपेक्षाओं से बंधी होती है, तो दूसरी ओर अपने व्यक्तित्व और आकांक्षाओं को भी साकार

करना चाहती है। साहित्य में यह द्वंद्व स्पष्ट है। शिवानी के उपन्यास इस संघर्ष को संवेदनशीलता से उभारते हैं, जहाँ स्त्रियाँ परंपरा का सम्मान करते हुए भी आधुनिकता की राह पकड़ने का साहस दिखाती हैं।

स्त्री विमर्श और शिवानी

उनका साहित्य स्त्री विमर्श को केवल सैद्धांतिक स्तर पर नहीं बल्कि भावनात्मक और व्यावहारिक स्तर पर भी सामने लाता है। उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री अस्मिता केवल सामाजिक पहचान का विषय नहीं, बल्कि आत्मिक मुक्ति का भी प्रतीक है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श वह धारा है जो स्त्री के अस्तित्व, अधिकारों और स्वतंत्रता की चेतना को स्वर देती है। इसमें स्त्री केवल सामाजिक संरचना की पीड़िता नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में उभरती है। इस परिप्रेक्ष्य में शिवानी का साहित्य विशेष महत्व रखता है। उनके उपन्यासों की नायिकाएँ परंपरागत भूमिकाओं में बँधी होने के बावजूद अपनी अस्मिता की खोज करती हैं और आत्मनिर्णय का साहस दिखाती हैं। *कृष्णकली, चौक घाट का सूरज* और *रति विलाप* जैसी कृतियों में स्त्रियों की संवेदनाएँ, संघर्ष और विद्रोह स्त्री विमर्श की केंद्रीय धारा को पुष्ट करते हैं। शिवानी ने स्त्री को केवल पारंपरिक आदर्शों की वाहक नहीं माना, बल्कि उसे एक स्वतंत्र और सजग मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार, शिवानी का साहित्य स्त्री विमर्श की अवधारणा को गहराई और मानवीय संवेदना प्रदान करता है।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श स्त्री की स्वतंत्र पहचान, अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना को स्वर देता है। इस संदर्भ में शिवानी का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उनके उपन्यासों की नायिकाएँ परंपरागत बंधनों में रहते हुए भी अपने जीवन का मार्ग स्वयं चुनने का साहस रखती हैं। कृष्णकली, चौक घाट का सूरज और रति विलाप जैसी कृतियों में स्त्रियों की संवेदनाएँ, संघर्ष और विद्रोह स्त्री विमर्श की धारा को सशक्त बनाते हैं। शिवानी ने स्त्री को केवल परिवार की परिधि तक सीमित न दिखाकर एक स्वतंत्र और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे उनका साहित्य स्त्री विमर्श का जीवंत दस्तावेज बन गया।

निष्कर्ष

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री की छवि अबला या दया की पात्र नहीं, बल्कि स्वतंत्र, आत्मनिर्णयी और अस्मिता-संपन्न के रूप में उभरती है। उनके लेखन ने हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना को नई दिशा प्रदान की। इस प्रकार शिवानी को स्त्री विमर्श की एक सशक्त प्रवक्ता कहा जा सकता है।

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना का जो स्वर उभरता है, वह हिंदी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी नायिकाएँ पारंपरिक सामाजिक और पारिवारिक बंधनों से जकड़ी हुई होते हुए भी अपने अस्तित्व को पहचानने और अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का साहस करती हैं। यह उनकी अस्मिता की खोज और आत्मनिर्णय की प्रक्रिया का प्रमाण है। शिवानी ने यह स्पष्ट किया कि स्त्री केवल परिवार या समाज के लिए समर्पित प्राणी नहीं है, बल्कि उसकी भी अपनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और सपने हैं, जिन्हें पूरा करने का अधिकार उसे है। उनके उपन्यासों में स्त्रियाँ प्रेम करती हैं, टूटती हैं, विद्रोह करती हैं और अंततः अपने निर्णयों के परिणाम स्वीकार करती हैं। यही उनकी आत्मनिर्णय की चेतना को प्रकट करता है।

शिवानी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री जीवन की जटिलताओं, भावनात्मक गहराइयों और सामाजिक विडंबनाओं का मार्मिक चित्रण किया। उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में जीती स्त्रियों को न केवल सामाजिक बंधनों की शिकार दिखाया, बल्कि उन्हें एक संघर्षशील और सजग व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी स्त्रियाँ परंपरा का सम्मान करती हैं, किंतु अन्याय और असमानता को स्वीकार नहीं करतीं। यही दृष्टि उन्हें हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का सशक्त स्वर बनाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिवानी के उपन्यास स्त्री अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना को साहित्यिक और सामाजिक स्तर पर स्थापित करते हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री की स्वतंत्रता और उसका आत्मनिर्णय केवल व्यक्तिगत मुक्ति का प्रश्न नहीं है, बल्कि सामाजिक विकास और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए अनिवार्य है। शिवानी का साहित्य आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि वह स्त्री के उस संघर्ष और चेतना को उजागर करता है, जो आज के समाज में भी पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है।

संदर्भ सूची

1. आचार्य, रामचन्द्र शुक्ल – *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. त्रिपाठी, सुधा (2011). *स्त्री अस्मिता और हिंदी साहित्य*. साहित्य भवन, इलाहाबाद।
3. नवल, रामकुमार – *स्त्री विमर्श और हिन्दी उपन्यास*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. पंत, गौरा (शिवानी). *कृष्णकली*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. पंत, गौरा (शिवानी). *चौक घाट का सूरज*. राजकमल प्रकाशन।
6. पंत, गौरा (शिवानी). *रति विलाप*. राजकमल प्रकाशन।
7. मिश्रा, उषा – *हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्मिता*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

8. रंजन, सुरेखा – *शिवानी के उपन्यासों में स्त्री चेतना,* साहित्य अकादमी जर्नल।
9. शर्मा, नमिता (2008). *शिवानी के उपन्यासों में स्त्री चेतना.* गंगाशरण प्रकाशन, वाराणसी।
10. शिवानी – *असंभव,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. शिवानी – *कृष्णकली,* राजपाल एंड संज, नई दिल्ली।
12. शिवानी – *मृण्मय्या,* हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।
13. शिवानी – *समर्पिता,* साहित्य भवन, इलाहाबाद।
14. शुक्ल, रमेशचंद्र (2015). *हिंदी उपन्यास और स्त्री विमर्श.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।